International Journal of Education and Science Research Review

E-ISSN 2348-6457

Volume-10, Issue-5 Sep - Oct – 2023

P-ISSN 2349-1817

www.ijesrr.org

Email- editor@ijesrr.org

ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के स्कूलों में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म अवधारणा और अध्ययन की आदतें का अध्ययन

Salim Ali, Research Scholar, Department of Education, Monad University
Dr. Maheep Mishra, Professor, Department of Education, Monad University

सारः

वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थित विभिन्न स्कूलों में पढ़ने वाले माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म–अवधारणा और अध्ययन की आदतों के लिए महत्वपूर्ण अंतर की जांच करना है। हमारी वर्तमान छात्र आबादी का अधिकांश हिस्सा उपलब्धि से कम है क्योंकि वे केवल भुगतान करते हैं। उनके शैक्षिक कार्य के लिए कम समय। कुछ महत्वपूर्ण भावनात्मक दक्षताएँ, जैसे, आत्म–अवधारणा की कमी, असंतोषजनक अध्ययन की आदतें जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती हैं, सूक्ष्म स्तर और साथ ही वृहद स्तर दोनों पर बिल्कुल भी अच्छी नहीं हैं। इसलिए, छात्रों के चर, आत्म–अवधारणा, अध्ययन की आदत और शैक्षणिक उपलब्धि की जांच करने की आवश्यकता महसूस की गई। प्रस्तुत अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए जालंधर जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के नौवीं कक्षा के छात्रों से डेटा एकत्र किया गया है।

मुख्य शब्दः शैक्षणिक उपलब्धि, आत्म–अवधारणा, अध्ययन आदतें, माध्यमिक विद्यालय, ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यालय।

1. परिचय

शिक्षा व्यक्ति की क्षमताओं और क्षमताओं को विकसित करने की प्रक्रिया है ताकि व्यक्ति को किसी विशिष्ट समाज या संस्कृति में सफल होने के लिए तैयार किया जा सके। हमारे समाज में, किसी की कुल क्षमताओं और क्षमताओं को आंकने के लिए शैक्षणिक उपलब्धि को एक महत्वपूर्ण मानदंड माना जाता है। इसलिए शैक्षणिक उपलब्धि शिक्षा के साथ–साथ सीखने की प्रक्रिया में भी महत्वपूर्ण स्थान रखती है। ऐसे कई कारक हैं जो छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करते हैं जैसे अवसर, प्रेरणा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, बुद्धि, आत्म–अवधारणा और अध्ययन की आदतें। अध्ययन की आदतों का उद्देश्य सीखने के दौरान किसी की संज्ञानात्मक प्रक्रिया को प्रेरित करना और मार्गदर्शन करना है। यदि कोई छात्र उच्च शैक्षणिक उपलब्धि दिखाना चाहता है, तो सबसे पहले, उसे स्वयं को जानना होगा – यही आत्म–अवधारणा है। अपनी ताकत और कमजोरियों को जानने और अध्ययन की अच्छी आदतें विकसित करने से निश्चित रूप से सर्वोत्तम परिणाम मिलते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धिः उपलब्धि का अर्थ है अध्ययन के विभिन्न विषयों में छात्रों द्वारा प्राप्त ज्ञान की मात्रा। यह पहलू विद्यार्थी को कड़ी मेहनत करने और अधिक सीखने के लिए प्रेरित करता है। इससे शिक्षकों को यह जानने में भी मदद मिलती है कि क्या उनकी शिक्षण प्रौद्योगिकियाँ शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारक हैं:

1. व्यक्तिगत कारकः ये कारक स्वयं व्यक्ति से संबंधित हैं। इन कारकों में मुख्य हैं:

- संज्ञानात्मक जैसे बुद्धि, सीखने की क्षमता, संज्ञानात्मक शैली, रचनात्मकता आदि।
- गैर–संज्ञानात्मक जैसे स्वयं और दूसरों के प्रति रवैया, स्कूल की धारणाएं, रुचियां, प्रेरणा, आकांक्षा का स्तर, अध्ययन की आदतें, व्यक्तित्व, आत्मसम्मान, शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण आदि।

2. पर्यावरणीय कारकः ये व्यक्ति के पर्यावरण से संबंधित हैं। इनमें सामाजिक–आर्थिक स्थिति शामिल है; पारिवारिक लक्षण और संगति अर्थात मूल्य प्रणाली, शैक्षिक प्रणाली, मूल्यांकन की प्रणाली, शिक्षक की दक्षता, प्रशिक्षण और शिक्षण के तरीके, स्कूल का वातावरण और घर का वातावरण, सहकर्मी समूह आदि।

1.1 आत्म–अवधारणाः

आत्म–अवधारणा को स्वयं के बारे में विश्वासों और उन विश्वासों के बीच संबंधों के एक समूह के रूप में परिभाषित किया गया है जो कुछ स्थितियों में व्यवहार में मध्यस्थता कर सकते हैं। इसे व्यक्तित्व के एकीकरण, व्यवहार को प्रेरित करने और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करने में एक महत्वपूर्ण कारक माना जाता है

आत्म–अवधारणा के घटकः आत्म–अवधारणा के तीन प्रमुख घटक हैं, जो इस प्रकार हैं–

- अवधारणात्मक घटक– यह वह छवि है जो व्यक्ति के शरीर की बनावट और दूसरों पर उसके द्वारा डाले गए प्रभाव के बारे में होती है। इसे अक्सर भौतिक आत्म–अवधारणा कहा जाता है।
- वैचारिक घटक – यह व्यक्ति की अपनी विशिष्ट विशेषताओं, उसकी क्षमताओं, उसकी पृष्ठभूमि और उत्पत्ति और उसके भविष्य की अवधारणा है। इसे मनोवैज्ञानिक आत्म–अवधारणा भी कहा जाता है।
- व्यवहारिक घटक – स्वयं का व्यवहारिक घटक व्यक्ति की वह भावना है जो वह अपने बारे में रखता है, अपनी मूल स्थिति और भविष्य की संभावनाओं के प्रति उसका दृष्टिकोण और खुद को देखने का उसका तरीका है।

1.2 अध्ययन की आदतें

अध्ययन की आदतें वे आदतन अभ्यास हैं जिनका उपयोग व्यक्ति अध्ययन और सीखने में मदद करने के लिए करता है। अध्ययन की अच्छी आदतें छात्रों को अच्छे ग्रेड हासिल करने और/या बनाए रखने में मदद कर सकती हैं। लर्नर्स डिक्शनरी ने अध्ययन को "ज्ञान प्राप्त करने का मानसिक प्रयास" के रूप में परिभाषित किया है। इसका मतलब यह है कि अध्ययन सीखने की एक कला है जो व्यक्ति को न केवल ज्ञान प्राप्त करने में बल्कि कौशल और अध्ययन करने की आदत प्राप्त करने में भी मदद करती है। प्रत्येक छात्र की अध्ययन आदत सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है जो किसी

निश्चित विषय के बारे में उसकी समझ को प्रभावित करती है। इसका मतलब यह है कि यदि किसी छात्र की अध्ययन की आदतें खराब हैं, तो उसके असफल ग्रेड पाने की संभावना अधिक है, यदि उस छात्र की तुलना की जाए जिसकी अध्ययन की आदतें अच्छी हैं। लेकिन "आदत" जैसा कि मनोविज्ञान के परिचय से परिभाषित किया गया था, का अर्थ है "किसी दिए गए मकसद को पूरा करने के लिए व्यवहार करने का एक सीखा हुआ, या निश्चित तरीका"। अकेले इस परिभाषा से, हम कह सकते हैं कि इसमें शामिल व्यक्ति वह है जो अपनी आदत बनाता या बनाता है। हो सकता है, आदतें बाहरी हस्तक्षेप से प्रभावित हो सकती हैं जैसे उसका वातावरण, उसकी तुलनाओं के प्रति उसका दृष्टिकोण, उसके शिक्षक और उसके आस–पास की किताबें और पढ़ने की सामग्री, यहां तक कि वह स्थान जहां वह पढ़ता है और अन्य कारक जो प्रभावी ढंग से समझने के लिए छात्रों की एकाग्रता को प्रभावित करते हैं। अपने पाठों को, और अपने दिमाग को खुद को अनुशासित करने और अपने लिए उचित अध्ययन की आदतें बनाने के लिए प्रेरित करना, जिसकी उसे पता है कि उसे वास्तव में आवश्यकता है।

2. सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

दलाल, रानी (2013) ने उच्चतर माध्यमिक छात्रों की सृजनात्मकता तथा बुद्धि में सम्बंध पर अध्ययन किया। हरियाणा के विभिन्न विद्यालयों से यादृच्छिक तकनीकी से 640 छात्रों को चुना गया। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार प्राप्त हुए– (1) छात्रों की सृजनात्मकता तथा बुद्धि में सार्थक सम्बन्ध पाया गया। (2) उच्च सृजनात्मक छात्रों तथा निम्न सृजनात्मक छात्रों की बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया।

दानिश्ता (2014) ने माध्यमिक स्तर के छात्रों की बुद्धि तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सम्बंध पर अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रुप में यादृच्छिक तकनीकी से 150 विद्यार्थियों को लिया गया। अध्ययन का परिणाम यह प्राप्त हुआ कि बुद्धि धनात्मक एवं सार्थक रुप से शैक्षिक उपलब्धि से सम्बन्धित है।

नथियाल (2014) द्वारा भारत के विश्वविद्यालय के प्रशिक्षकों की समायोजन तथा भावात्मक बुद्धि का अध्ययन किया गया। इन्होनें भारत के राज्य तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के 42 प्रशिक्षकों को प्रतिदर्श के रूप में लिया इस अध्ययन में यह परिणाम प्राप्त हुआ कि राज्य स्तर के प्रशिक्षकों का समायोजन केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षकों से बेहतर पाया गया। साथ ही राज्य तथा केन्द्रीय विश्वविद्यालय के प्रशिक्षकों के भावात्मक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

रामी एवं अन्य (2014) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक कारकों के मध्य सहसम्बन्ध पर अध्ययन किया। गुच्छ तकनीकी द्वारा 375 छात्रों को सेम्पल के रुप में लिया गया। निष्कर्ष यह प्राप्त हुआ कि सृजनात्मकता के सहपैमाना तथा भावात्मक बुद्धि में सार्थक तथा धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

जिरॅाक (2015) ने भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक चिंतन के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन शैक्षणिक उपलब्धि के साथ किया। प्रतिदर्श के रूप में 156 महिला व पुरूष विद्यार्थियों को लिया गया। उपकरण के रू॰ में ब्रेडबेरी ग्रीब्स की भावात्मक बुद्धि प्रश्नावली तथा सृजनात्मक चितंन के लिए अबेदीस की प्रश्नावली का उपयोग किया गया। अध्ययन की परिकल्पनाएँ इस प्रकार थी–(1) भावात्मक बुद्धि तथा शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सम्बन्ध है। (2) सृजनात्मक चिंतन तथा शैक्षणिक

उपलब्धि में सार्थक सम्बन्ध है। (3) पुरूष तथा महिला विद्यार्थियों के भावात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर है। (4) पुरूष तथा महिला विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन में सार्थक अन्तर है। परिणाम यह प्राप्त हुए कि:–(1) भावात्मक बुद्धि तथा शैक्षणिक योग्यता में सार्थकसम्बन्ध नहीं पाया गया। (2) सृजनात्मकता तथा शैक्षणिक योग्यता में सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। (3) महिला तथा पुरूष विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। (4) महिला तथा पुरूष की भावात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

लाभाने, बाविसकर (2015) ने कला तथा विज्ञान के महाविद्यालय विद्यार्थियों की आत्मसंकल्पना तथा भावात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रूप जलगाँव जनपद स्थित महाविद्यालय के 18–22 वर्ष के 140 विद्यार्थियों को लिया। अध्ययन के परिणाम इस प्रकार थे– कला तथा विज्ञान के विद्यार्थियों के आत्मसंकल्पना के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। कला तथा विज्ञान विद्यार्थियों की भावात्मक बुद्धि में सार्थक अन्तर पाया गया। विज्ञान के विद्यार्थियों में कला के विद्यार्थियों की तुलना में उच्च भावात्मक बुद्धि पायी गई।

राठौर तथा मिश्रा (2015) ने शहरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विधार्थियों का लिंग के आधार पर समायोजन तथा सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अनुसंधानार्थी ने अपने अध्ययन हेतु इन्दौर के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के 100 छात्र व 100 छात्राओं का चयन किया। अध्ययन में इन्होनें पाया कि छात्रों की तुलना में छात्राओं में सामाजिक बुद्धि अधिक थी व उनका समायोजन भी उच्च था।

अरोरा (2016) ने किशोरो की सृजनात्मकता तथा भावात्मक बुद्धि के मध्य सम्बन्ध पर अध्ययन किया। प्रतिदर्श के रूप में पंजाब (भारत) के लुधियाना जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 10+2 कक्षा के 200 विद्यार्थियों को यादृच्छिक विधि द्वारा लिया गया। उपकरण के रूप में डॉ. एस.के तथा श्रीमति शुभा मंगल की इमोशनल इन्टेलीजेन्स इनवेन्टरी तथा बाकर मेहन्दी का सृजनात्मक चिंतन टेस्ट को प्रयोग में लाया गया। आँकड़ो का विश्लेषण टी–टेस्ट तथा सहसम्बन्ध गुणांक द्वारा किया गया। परिणाम यह प्राप्त हुआ कि भावात्मक बुद्धि तथा सृजनात्मक के मध्य मजबूत धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

3. उद्देश्य:

1. ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच आत्म–अवधारणा के स्तर का अध्ययन करना।

2. ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों की जांच करना

3. ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच शैक्षणिक उपलब्धि के स्तर का अध्ययन करना।

4. परिकल्पनाएँ:

1. ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की आत्म–अवधारणा के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

2. ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3. ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

5. नमूनाः

अध्ययन के नमूने में मुरादाबाद जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के 200 छात्र शामिल हैं। मुरादाबाद जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों से 100 और शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों से 100 छात्रों का चयन किया गया। नमूने का चयन करने के लिए यादृच्छिक नमूनाकरण तकनीक को नियोजित किया गया था।

5.1 अध्ययन का डिज़ाइन

वर्तमान अध्ययन के लिए वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति को नियोजित किया गया था। परिकल्पनाओं का परीक्षण करने के लिए मुरादाबाद जिले के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों से डेटा एकत्र किया गया था।

5.2 उपयोग किए जाने वाले उपकरणः

1. डॉ. राज कुमार सारस्वत द्वारा स्व–अवधारणा प्रश्नावली (एससीक्यू)।

2. स्टडी हैबिट इन्वेंटरी (एसएचआई) (मुखोपाध्या और संसनवाल) द्वारा।

3. शैक्षणिक उपलब्धि को छात्रों द्वारा उनकी मध्यावधि परीक्षाओं में प्राप्त अंकों से मापा जाता था।

6. डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषणः

वर्तमान अध्ययन के लिए, डेटा डॉ. राज कुमार सारस्वत द्वारा स्व–अवधारणा प्रश्नावली और मुखोपाध्याय और सनसनवाल द्वारा अध्ययन आदत सूची की मदद से एकत्र किया गया था। यह डेटा माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच स्व–अवधारणा और अध्ययन आदत के बीच तुलना का अध्ययन करने के लिए एकत्र किया गया था। . एकत्रित डेटा को Microsoft Excel–2007 सॉफ़्टवेयर का उपयोग करके कोडित और संसाधित किया गया था। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुसार प्राप्त परिणामों का विश्लेषण निम्नलिखित अनुभाग के अंतर्गत किया गयाः

स्व–अवधारणा (एन=200) के माप के लिए छात्रों के अंकों का बारंबार वितरणः–अधिकांश छात्रों ने स्व–अवधारणा के चर पर 180–189 के बीच अंक प्राप्त किए। 47 छात्रों ने 170–179 के बीच स्कोर किया और केवल 3 छात्रों ने 210–219 के बीच स्कोर किया।

अध्ययन आदत के माप के लिए छात्रों के अंकों का बारंबार वितरण (एन=200):– यह पाया गया कि अधिकांश छात्रों ने अध्ययन आदत के चर पर 172–181 के बीच अंक प्राप्त किए। केवल एक छात्र ने 112–121 के बीच अंक प्राप्त किये।

शैक्षणिक उपलब्धि के माप के लिए छात्रों के अंकों का बारंबार वितरण (एन = 200):– शैक्षणिक उपलब्धि के चर पर अधिकांश छात्रों ने 172–181 के बीच स्कोर किया। केवल एक छात्र ने 112–121 के बीच अंक प्राप्त किये।

डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण (बी): – अध्ययन के लिए तैयार किए गए उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, टी–टेस्ट को नियोजित करके डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया था।

तालिका संख्या 1: आत्म–अवधारणा पर ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना

स्कूल के प्रकार	N	M	S.D	t-value	p-value	स्तर का महत्व	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र	100	179.59	14.234	0.003155	.99753	0.05 0.01	महत्वपूर्ण नहीं है
स्कूलों	100	185.45	13.482				

महत्व स्तर 0.05

तालिका संख्या 1 आत्म–अवधारणा पर ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना दर्शाती है। उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने एसडी 14. 234 के साथ 179.59 का औसत स्कोर हासिल किया है, जबकि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूल के छात्रों ने एसडी 13.482 के साथ 185.45 का औसत स्कोर हासिल किया है। यह ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और शहरी विद्यालय के छात्रों के बीच आत्म–अवधारणा पर थोड़ा अंतर दिखाता है। तालिका से यह स्पष्ट है कि स्व–अवधारणा (t–मान 0.003155 <.05) पर दो समूह अर्थात। ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्र महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं। अतः परिकल्पना सं. 1, जिसका अर्थ है ″सरकार की स्व–अवधारणा के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।″ और सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के छात्र। ″स्वीकार किया जाता है।लिका संख्या 1 आत्म–अवधारणा पर ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना दर्शाती है। उपरोक्त तालिका के अवलोकन से यह भी पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने एसडी 14.234 के साथ 179.59 का औसत स्कोर हासिल किया है, जबकि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूल के छात्रों ने एसडी 13.482 के साथ 185.45 का औसत स्कोर हासिल किया है। यह ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और शहरी विद्यालय के छात्रों के बीच आत्म–अवधारणा पर थोड़ा अंतर दिखाता है। तालिका से यह स्पष्ट है कि स्व–अवधारणा (t–मान 0.003155 <.05) पर दो समूह अर्थात। ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्र महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नहीं हैं। अतः परिकल्पना सं. 1, जिसका अर्थ है ″सरकार की स्व–अवधारणा के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।″

तालिका संख्या 2: अध्ययन की आदतों पर ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना

स्कूल के प्रकार	N	M	S.D	t-value 0.00234	p-value	स्तर का महत्व	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र	100	175.99	19.050		.998167	0.05 0.01	महत्वपूर्ण नहीं है
स्कूलों	100	185.72	25.122				

तालिका संख्या 2 अध्ययन की आदतों पर ग्रामीण और शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना दर्शाती है। उपरोक्त तालिका से पता चलता है कि ग्रामीण. माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने 19.050 एसडी के साथ 175.99 का औसत स्कोर हासिल किया है, जबकि शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने 25.122 एसडी के साथ 185.72 का औसत स्कोर हासिल किया है। इसका मतलब यह है कि शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की संख्या सरकार की तुलना में थोड़ी अधिक है। अध्ययन की आदतों के आधार पर माध्यमिक विद्यालय के छात्र स्कोर करते हैं और तालिका से यह स्पष्ट है कि अध्ययन की आदतों के आधार पर (टी–मान 0.00234 <. 05) अध्ययन के तहत दो समूह अपनी अध्ययन की आदतों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं दिखाते हैं, इसलिए परिकल्पना एच 02 ″वहाँ मौजूद है सरकारी और सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है′′ स्वीकार किया गया है।

तालिका नं. 3: शैक्षणिक उपलब्धि पर ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना

स्कूल के प्रकार	N	M	S.D	t-value	p-value	स्तर का महत्व	परिणाम
ग्रामीण क्षेत्र	100	301.53	113.26	3.05199	.002586	0.05 0.01	महत्व स्तर
स्कूलों	100	400.685	129.17				

तालिका संख्या 3 शैक्षणिक उपलब्धि पर ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की औसत तुलना दर्शाती है। उपरोक्त तालिका के अवलोकन से पता चलता है कि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों ने 113.26 के एसडी के साथ 301.53 का औसत स्कोर हासिल किया है, जबकि शहरी क्षेत्र के माध्यमिक स्कूल के छात्रों ने 129.17 के एसडी के साथ 400.685 का औसत स्कोर हासिल किया है। यह शैक्षणिक उपलब्धि (टी–मान 3.05>0.05) पर तालिका से स्पष्ट है, दो समूह अर्थात। ग्रामीण। माध्यमिक विद्यालय के छात्र और सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के छात्र काफी भिन्न हैं। तालिका से पता चलता है कि शहरी माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि ग्रामीण की तुलना में बेहतर है। माध्यमिक विद्यालय के छात्र. इसलिए, परिकल्पना एच 0.3 ″सरकारी और सार्वजनिक माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है″ को खारिज कर दिया गया है।

निष्कर्षः निष्कर्षों के आधार पर, निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए हैं:

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म–अवधारणा में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

2. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की अध्ययन आदतों में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

3. ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण अंतर है। शहरी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की तुलना में अधिक है।

7. शैक्षिक निहितार्थ

शिक्षकों और अभिभावकों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने बच्चों को आत्म—अवधारणा के महत्व से अवगत कराएं.. माता—पिता और शिक्षकों को अपने बच्चों को बेहतर उपलब्धियों के लिए अच्छी अध्ययन आदतें विकसित करने में मदद करनी चाहिए। व्यक्तियों के भीतर सकारात्मक और यथार्थवादी आत्म—अवधारणा विकसित करने की अपेक्षाकृत असीमित क्षमता होती है। तुलनीय प्रतिभाओं के विद्यार्थियों के बीच उपलब्धि में योगदान देने वाले कारकों में से एक विद्यार्थियों की अपने काम को व्यवस्थित करने और कुशलतापूर्वक अध्ययन करने की क्षमता में भिन्नता है। इसलिए मार्गदर्शन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र, कैसे अध्ययन करना है, कैसे सीखना है और कैसे कुशलतापूर्वक काम करना है, इसका विशिष्ट प्रशिक्षण है। एक शिक्षार्थी जिस अध्ययन में संलग्न होता है उसकी मात्रा और प्रकार उसकी उम्र और ग्रेड स्तर के साथ भिन्न होती है। सीखने वाले की तकनीक और अध्ययन की आदतों को बदलती शिक्षण सामग्री, उद्देश्यों और वांछित परिणामों के अनुसार समायोजित करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

(1) अडसुल आर.के. (2011)। उच्च एवं निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले किशोरों की स्व अवधारणा, इंडियन स्ट्रीम्स रिसर्च जर्नल, श्रीमती। मथुबाई गरवारे कन्या महाविद्यालय, सांगली, 1 (द्वितीय) मार्च 2011, पृ.118—122।

2) अग्रवाल एन.एम. और कुमार वी. (2010) माध्यमिक स्तर के कला और विज्ञान के छात्रों की अध्ययन आदतें। एडुट्रैक्ट्स 10, 01, 37—39 सितंबर।

(3) चामुंडेश्वरी एस., श्रीदेवी वी. और कुमारी ए. (2014)। छात्रों की आत्म—अवधारणा, अध्ययन आदत और शैक्षणिक उपलब्धि। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ह्यूमेनिटीज़ सोशल साइंसेज एंड एजुकेशन (आईजेएचएसएसई) 1(10), 47—55।

(4) गुरुबसप्पा, एच.डी. (2015)। माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि के सहसंबंध के रूप में समायोजन और आत्म अवधारणा। एडुट्रैक्स अगस्त 2015.14 (12) पीपी.46—48।

(5) पौरा आर.के. और सुश्री अर्चना (2011) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में उनकी आदतों का अध्ययन करती हैं। इंटरनेशनल रेफर्ड रिसर्च जर्नल, जून 2011, खंड II, 21

(6) सादिया तय्यबा, (2012) "पाकिस्तान में शैक्षणिक उपलब्धि, स्कूली शिक्षा की स्थिति, छात्र और शिक्षकों की विशेषताओं में ग्रामीण—शहरी अंतराल", इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल मैनेजमेंट, वॉल्यूम। 26 अंकः 1, पृ.6—26

(7) यादव, आर. (2015)। सरकारी और पब्लिक स्कूलों में पढ़ने वाले हाई स्कूल के छात्रों की आत्म अवधारणा, अध्ययन की आदतें और शैक्षणिक उपलब्धि। EDUTRACKS फ़रवरी 2015.14 (6) पृष्ठ 35—36।

International Journal of Education and Science Research Review
Volume-10, Issue-5 Sep - Oct – 2023 E-ISSN 2348-6457 P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

(8) अग्रवाल, जे.सी. (2015) एजुकेशनल रिसर्च एन इन्ट्रोडक्शन, आर्य बुक डिपो, नई दिल्ली।

(9) भटनागर, आर. पी. (2015)शिक्षा मनोविज्ञान, मीनाक्षी पब्लिकेशन, कानपुर ।

(10) भटनागर, सुरेश (2015)शिक्षण अधिगम व विकास का मनोविज्ञान,इन्टरनेशनल पब्किेशन,मेरठ।

(11) भार्गव, महेश ;(2015) आधुनिक मनोवैज्ञानिक परिक्षण एवं मापन, शैक्षिक प्रकाशन, आगरा ।

(12) भार्गव, ऊषा (2015)किशोर मनोविज्ञान, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर ।

(13) गुप्ता, एस.पी. (2015)आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन,इलाहाबाद।

(14) पाण्डेय, के. पी. (2015)शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी ।

(15) पाठक, पी.डी. (2016)शिक्षा मनोविज्ञान,विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा ।

(16) रायजादा, वी.एस. (2016) शिक्षा में अनुसंधान के आवष्यक तत्व, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी,जयपुर।